र्ण॥ सकलवाचकसिरोमणिमल्लोपाध्याय श्रीश्री३ श्रानंदिविजयगणिगुरुभ्यो
नमः॥ सावद्ययोगविरई॥ उक्कित्तणगुणवओयपडिवत्ती॥ खलियस्सनिंदणावणा
तिगछगुणक्खरणाचेव॥१॥ पहिलउं बज्जावज्जपकनानामपहिलीगाथोइंकहीइं
बज्ज॥ तिहांसा वज्जंजोगविरई॥ साव द्यव्यापारवज्जोज्ञाटाली इं तिसामा
थिककहीइ॥१॥ उक्कित्तणा०॥ च उवीसतीर्थंकरना गु णवर्णवी
इं॥ तत्व उ वी समछउत्तोग स उ जोयणारकहीइ॥२॥ गुण
वउय०॥ गु ण वंतानरुमाहिंचा रि त्रनाज्ञाननादर्श न ना॥ गुणहु
इं तहनइप्र तिपत्तिन्नाणीवांदणुकी जइ तिवंदनीककहीइ॥३॥ खलि
यस्स०॥४॥ पुण्यकरतांखलिउन्नाणीइ॥ चूकउपडिकमइ॥ निवर्त्तइन्नाणीइयाव
उउमरइ॥ तेपडिकमणुकहीइ॥५॥ वणतिगणजणकहीइ॥ जिमघाउत्तागुहुइ
तिपडीनीनिरउकीजइ॥ तिमणपरूपीयाघाउत्तागुहुइ॥ तिकासगनइंकरवइ

पाप नोधा उरू कइ तिकासग कहीइ ॥५॥ गुणथ्थरणा ० ॥ जीवनइं पोतइं गिया न्नवना
संच्यामित्या कर्म्मातफेडवानइं टाल्तवानइं ॥ णमो ॥ नुकारमहीणा रि मिषुरि
मढव्यासणुं ॥ एकासणुं नीवी आंबिल उपवास आदिदई पच्चक्काण कीजइ ॥ त
गुणथ्थरणा कहीइं ॥५॥ [illegible] णपहिल्ली गाधामांहिं [illegible] बज्जावश्यक
हियंखइ ॥१॥ विशेषतउल्लइआ व [illegible] श्यक विस्तारि उ कहीइब
इं ॥ चा रि त्त विमोहीकी र इ सामाईए ण कि त्नइरू
ई ॥ सावज्जे य जोगाणं वज्जणा से वणत्तणउ ॥२॥ चा रि च्चनूनिर्म
त्त पणकिम कीजइ सामायिकिइंकं कही ॥ कित्नइ सिइ सा चइ जग
तिविध्वमाहिसावद्ययोग नावज्जीवाउ ॥ अनेरा नइ सावद्ययोग वज्जी नइ नि श्चल्त
रहइ ॥ तिवारइं सामायकहुइ ॥ बीजी गाहापहिल्त बज्जावश्यकनूं त्नरूणा कहिउं
ब ॥२॥ दंसणथा रविमोही ॥ चउवीसाय चुएणकइइय ॥ अच्चनूथगुणा कित्तणा

रूवेणजिणवरिंदाणं ॥३॥ दंसणाचा रनूविमोहिकहीइनिर्मत्तणएणनूंकरवूंचउवीस
॥ चउवीसछउत्तोगस्सउज्जोथगारइंकरीकुइ ॥ जिहांवीतरागनीस्तुतिवीतरागस्तवी
इ ॥ तिचउवीसछउ ॥ चउवीसइं तीर्थंकरस्तवीइ ॥ किसीपरिइ ॥ अतिहिंउज्जत
आश्चर्यकारी थागुणतीजइजिनव रेइना ॥ बीजीगाधाइंच उवीसछउ
वएणविउ ॥ ब ॥ नाणाईया उ गुणा तस्सपुच्चप डि वत्तिकर
णाउ वे द ण एणविहिणा की र मोहीउ ति सि उ ॥४॥
ज्ञानादिक गु णअथवागुरुनाम त्री स गुण ॥ तस्सपुन्न प ण तिणिइं
गुणिइंसंपूर्ण कुइ ॥ अथवा ॥ चारि त्तना ॥ ज्ञाननातपोगु णतणाइंक
रीपूरियाकुइ ॥ तेहवागुरुनइंप तिपत्तिकरवातउवांदणानइंकरवइंप्रति
पत्तिविनउकुइ ॥ जीवनइंवांदणाइंदवइं अमुन्नाकहीइंपाडूयांकमाफइं
जिमश्रीकृष्णअढारसहस्त्रमहात्मानइं वांदणानइंदवइं सातमीघरूबीजी

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

इ आविउं वांदणां नइं दवइ जीवनइं सुद्धि हुइ च उछीगाहाइं वांदणुं कहिउं ॥ ॥
॥ खत्तिय समय तसिपुणो विहिणा जेनंदणाइ पडिक्कमणं ॥ तिणं पडिक्कमणो
णं ति सिपिय की २ ए मोही ॥ ॥ जिजीव तेज्ञानदर्शनि चा रित्र घरू खत्न उचूकउ
हुइ ति जीव जउ विधिइं करी आप णा पउं निंदवइ खलीव त्ती अनइ
ली आया ए प करणी नकरइ ति हनु पाछउं उंहट इ ॥ पापक
खानु वी हु उपाछु उस र इ ति पडिक म णुं करी
इ ति णिप डि कमणां इं जीवनइं सु द्धि निर्मल पणुं हु इ पांचमी
गाहाइं पडिक मणउं वणि हिउं ॥ ॥ चरणाई थाई याणं ज हक्कमंवणा ति
गिछ रूवणं पडिक मणासुद्धाणं मोही तहकउ सग्गेणं ॥ ६ ॥ ए णिइं पडिक मणाइं
निवृत्ति न्नणइं न्ना विउ ति अर्थ यिक करी इं चरणा दिक पतलइं जे चा रित्र पाल
ना अती चार न्नणी इं या पना प्रकार ति रा फेडवा नइं का जिइं काँस गा करी जइं जिम

घाउ त्सा गुहुइ ते हनूं पडी गणुं करी जइ जि पापना प्रकार ते हफेडवा अती चार पडि क
मतां कहतो अव्या हुइं ति पापना अती चार का उस्सग नइं करवइं सुद्धि निर्मल प
णुं जी वनइं हुइ ॥ छठी गाहाइं का उस्सग वर्णि विउ ॥ ६ ॥ गुण क्खरण रूवणं पञ्चो क्ख
णाणं तवइरे यार स्स वी शि या यार स्स पुणो मज्झे हि विकार ए मोही ॥ ७ ॥
गुण क्खरण रू विण न्नणी इं पञ्च क्खा णनइं करवइ ॥ जे पञ्चक्काण
के हवु जा णि वुं गुण सघ त्ना इ धरवा नूं रू प म इहइ
तपाचारबा र नेदना जे अती चार जी वनइं पाडइ पाप आ वांहुइ ते
सघला इ पाप ना अती चार वीर्याचा रू कहीइ सपरनूं सर्थि पणु आप
णी आ क्ति नूं सम घीइ नूं करवइ जाइं वीर्याचार तप ए का सग्ग आदिक हुतां बमा
सी तप त्तग इं करवइं जीवनइं सुद्धि हुइ ॥ पत्त न इ सातमी गाहाइं पञ्चक्काण व
स्मि विउं ॥ ७ ॥ हिवइ जिण सुहगइ त्ना धइं तीर्थंकर नूं रूप जवु उत्तरीइं त

तीर्थंकर ऊपनु दहउ ॥छ॥ आवइपकनइंयोगपताहुइ तेसुहणांकहीइंबइ ॥ग॥ यावम
ह ॥मीह ॥इ॥ अग्निसेयभ ॥दामप ॥मसि ह ॥दिणयर ॥कयं ८ ॥ऊन्ने ॥पउममर ॥
॥सागर ११ ॥विमाणन्नवणा १२ ॥रयणुच्चय १३ ॥सिद्धिच १४ ॥८ ॥पहिन्नइसुहणाइ
गजहाघीउं ॥बीजइवृषन्नसाड ॥त्रीजइमीहसिंघ ॥ चउछइअ
ग्निसेयम हा न्नस्त्री ॥पांचम इं ऊन्नपूर्णकल म ॥ बहइ
मसिचं इ मा ह ॥सातमइ दि णा थरश्रीसू र्य ॥ आठम
इकयंध्वज प ताका ८ ॥नउमइऊं न्ने पूर्णकलम ॥ द म मइपउम
मर कमत्तन्न रिउंतांत्नाव १० ॥इगपा रमइसागरसमुद्द ११ ॥ बारमइविमा
णन्नवणाइंइन्नूविमान १२ ॥तेरमइरयणुच्चयरन्नुमोदुपर्वतश्रीधुटिणा ॥१३॥
चऊदमइंग्निहिंचमिरवाधूमधूमनउक्षात्नासहितविश्वानर ॥ ८ ॥हिवचउसरणा
वातकेहीकहीइबइ ॥अमरिंदनरिंदमुणिंद वंदियवंदियंमहावी रं ऊसत्तणा

बंधिबेधुर मन्नयणं किंतयस्सामि ॥ए॥ श्रीमहावीरचउमसुतीर्थंकरवांदीनइंचउम
रणइसिइंनामिइंअध्ययनकीतिर्त्तिन्नणीइवखवाणेमि ॥ अध्ययनकेहुवुंबइ ऊ
सत्तकहीइंडाहोमनुष्यहिंअनुबंधन्नणीइनिरंतरबंधरन्नणीइमनोज्ञकहुंबइ
महहवकरी नइं ॥ श्रीमहावीरकहइ वाबइ ॥ अमरिंदकहइ तोइंइ नरिं
दकहतांच ऊ वर्तिप्रमुखराजानइं मु णिंदकहतामहा त्मा तांहसवि
हुंवांदी ता च रणांकमत्तबइ ॥ ए ॥ चउस र ण गमणं
दुक्कडगरिहासुकडाणुमोय णांचव एसुगुणो ॥ ए ॥ णुवरयं
कायत्रीउसग्गांहउत्ति ॥१०॥ चउसरणनइंकरवइं दुःकृतन्नणीइंपा
पातहनीगर्हाकहीइंनिंदवइं ॥ अनइंसुकृतपुण्यनीअनुमोदनाजीवनइंघणाणु
णहइ न्नव्वजीवइंआपणांकुआत्नन्नणीइसुखनइंकारणिनिरंतरकरिवू ॥
॥ अरिहंतसिद्धसाहू केवलिकहिउसुद्धावहीधर्मो ॥ए॥ चउशरीचउगइ हरणा

मरणं तन्नहुई धन्नो ॥११॥ अरिहंत ॥ सिद्ध ॥ साधु ॥ केवलीनुं कहुंउ धर्म्म ॥ सुख
कीरीउ एच्यारिशरणा चउगतिनाहरणा हारधन्नागपवंतनइशरणाहुइंआप
णामनउहिइंपडिवजइ ॥१२॥ अहमोजिणन्तनिन्नरघुरेमेचकचूयकरातो प
हरिसपणउ मीसे सामंमिसंकथंज लीन्नणइ ॥१२॥ अथए तत्तासुअंनं
तरपुणपवं त जावचउसरणाक र णहारहुंउ इमि उं न्नणइक
हइ पुइ ण कि हवुहुंउ जि न वी रागनीन्नक्ति ते ह नुन्नस
मूहातहत्त ग इंऊपजउ सयरि रो मांच तहरोमांच रू पीउथम
शिकांचूउप हरिउ करातरोइस्पा न्नणी अतरंगवयरीप तिहंमहोन्नी
षणारोइपए हवुहुंउ अतिहिहरिषसयुक्तप्रणामकरउउभिश्रन्नणइअतिहि
मीमन्नणइमस्तकिंबहूहाथचडावीनइवीतरागनइमस्तवइ ॥१३॥ रागदोमारी
णं हंताकम्मदुगाइमरिहंता विसयकसायारीणं अंहिंताहुंउमेसरणं ॥१४॥ जे

× वि ×

अरिहंतमुकनइंशरणहुंरागाद्वषरूपीयावयरीनाहंताकहीइंहणानहार अनइवि
षयकषायनाहणानहार आवइंकर्मनाहणानहार तेएहवाअरिहंतमुकनइंशा
रणहु ॥१३॥ रायसिरिमवकमित्ता तवचरणंदुश्चरंअणुचरित्ता केवलमि
रिमिरिहंता अरिहंताहुंउमेसरणं ॥१४॥ जेहअरिहंतेराज्य स्त्रीत्यजीबं
डी अनइं दी हिन्नातपतपश्चर ण पबइंकरीनइ अ न इंकवल
ज्ञा ननी त त्ती नइंयोगप हु ता तएहवाअर्हंत मु क नइंशा
रणहु ॥१४॥ घुयवदणम रि हंता अमरिंदनरिंद पू थमरिहंता
मासयसुद मरिहंता अरिहंताहुंउ मेसरणं ॥१५॥ जेअर्हतसु तिकरवी
वांदवु तहनइंयोगपइ अनइंअमरेंद्रदेवा नरेंद्रराजा तेहनी कीधी पूजा योग
हुइ अनइंशा स्वतूंमोक्षनोगपवता एवाअरिहंतमुकनइंसरणा ॥ परमाणंद
मुत्ता जाइंदमहिंदन्नाणमरिहंता धम्मकरंकहंकरिहंता अरिहंताहुंउमेसर

णं ॥१६॥ जेअ अर्हंत [illegible] इजीवनीदयाए [illegible] पिआरामनोगनन्नावजाणइं थोगंडुगणध
रआदिदईमहेंइंदादिकातहनाध्यानवाजाणा धर्मकघाकरवायोग्य तिअर्हंतस
नुमुकनइंसरणहुं ॥१७॥ सव्वजीवाणमहंसं अरिहंता सव्ववयाणमरिहंता अरिहं
ताहंतुमसरणं ॥१८॥ जिअर्हंतसघला इजीवनीदयाए तिपात्न ताहिंमाअ
णाकरता अ नइंमाचुवचनबो त्न ताअनइंब्रह्मचर्य पा चैर्यस
मग्ग ति पा त्नता एहवा अर्हंतमुकनइंस र ण हु
[illegible] ल [illegible] ता [illegible] उ सरणमु
वसरिन्ना च उतीसंअइस एनिसे विन्ना धम्मकहेचकहि ता अरिहं
ताहंतुमसरणं ॥१९॥ जेअर्हंतमसुवसरण माहिंबइसीनइचउत्रीसअ तिशयनि धव्य
कहीइसेवीनइं धममयकघाकरुताहता एहवाअर्हंतमुकनइंसरणहुं ॥२०॥ एगाइ
गिरणिगा संदहंदेहं णंसमुछिन्ना निद्दूयमणुमासिन्ना अ [illegible] रिहंताहंतुमसरणं

॥२१॥ अरिहंताकइंवाणीइंअनेकजीवनासंदहबद्दीनइं चित्तुवननइंअनुसामयंतकहु
इं धर्ममयसीखामणादिताएहवाअर्हंतमुकनइंसरणहुं ॥२२॥ वयणमएणत्तुवणं नि
द्धाणविन्नाणेसुठाविन्ना जियत्तोयमुद्दविन्ना अरिहंताहंतुमसरणं ॥२३॥ जिअर्ह
ंतवचनअ रूपीएअमृतचिन्तुवनपा णीनइं ज्ञानचारित्रद र्शनादिकगु
णानइंवि ष इंस्थापता अनइं जी वत्तोकऊधरता ए हवाअर्हं
तमुक न इं तेहनुसरणहु ॥२४॥ अच्चुय गु वं तनिय
जममरह र प माहियदिगतनि य यमणइंअणात प डिवज्जोस
रणमरिहंते ॥२५॥ जेअर्हंतअतिहिं अद्भुत आश्चर्यकारीयागुण तेगुणमहित
निजआपणु अशाश्वतचंद्रमातेहनानजणहिंअतिहिं निर्मलनयजातेणइयशइसा
धिउंदिगंतत्तगाइ दिसिनाअंतत्तगइं आपणाइंसघलीइदिसिधवत्तवर्मकीधी अ
नइंनिजआपणपुं [illegible] नाद्यसंत आपणपाइंजाहिनही ॥अनइंअंतइंतेलनहि ॥

अनइ॰ अन्नइ तिहा वा एहवा अ॰ र्हंतइं कारणपडिवज्जउं ब॰ उ॰ चिय जरमरणाणं॰ समत्त
दुरकतमत्तसरणा णं॰ तिकूयाणजरणासुयाणं॰ अरिहंताणंनमोताणं॰ रर॰ जाइजरा
हंतउन्नितबाज्झोजरा अनइंमरणाइइ॰ अनइसमस्तसघत्नाइदुरवत्तदुविइक
रीआर्तपीडा॰ मघत्नाइंसव्वप्पणीआ॰ जीवनइंशरणंकुस्वा॰ नकपामंताअ
नइंत्रिभुव॰ ना॰ नाजनरहइंसम॰ ग॰ कुरुवदेता॰ एह॰ वा॰ अर्हंतर
सिहिमा॰ ह॰ रु॰ नमस्कारइ॰ ब॰ ए॰ तत्तइअर्हं॰ त॰ ना॰ शरणा
नुअधिका॰ र॰ हूउ॰ब॰ हिवइंसि॰ द्ध॰ नुअधिकारक॰ ही॰ इबइ॰ब॰
अरिहंतसर॰ णमत्तसुद्धि॰ नहुपरि॰ सिद्धबहूमाणा॰ पणाय॰ मिरिरइयक
रकमत्त॰ सिद्धरोमहरिसंन्नाणइ॰ रइ॰ जेअर्हंतनइंशरणंइंयमत्तनाणइंपाय
तहसुद्धिनिर्मलपणुतेणइकरीनिर्मलपणाइत्तनच्चन॰ णइत्नाथु॰ परिसुद्ध
निर्मलसिद्धनूंबहुमानजेणं॰ जीविइंतजीवातपुण्यवंतप्रणामपूर्वकप्रणामकरी

मस्तकिंबहूदाघचडावीमाघइमुउइमहाघकरीमहर्षपणाइंइसिउन्नाणइंकहइब॰
कम्महरकयसिद्धा॰ साहावियनाणदंसणसमिद्धा॰ सव्वहत्नहसिद्धा॰ तंसिद्धादुउमस
रणं॰ रअ॰ जसिद्धआवकर्मनइंक्षयकरवइसिद्धहूया॰ अनइंजसिद्धमहजिइंजिज्ञा
नूदर्शनचारि॰ त्रेकरीसमूहरिद्धिवंत॰ जसिद्धरद्धिंसर्वसघत्नो॰ इंअनघनीत
त्रिदानादि॰ क॰ मीधी॰ तसिद्धम॰ म॰ कारहिंशरणाहु॰ र॰ ४॰ तियलोय
मच्छय॰ छा॰ प॰ रमपयछा॰ प॰ र॰ मपयछा॰ अ॰ चिंतसामछा
मंगलसिद्ध॰ प॰ यछा॰ सिद्धासरणं॰ सु॰ दपमछा॰ रप॰ जे॰ सि॰ द्धत्रिभुवन
नइमस्तकिमु॰ क्ति॰ मित्नातदऊपरि॰ ब॰ इअचिंत्यसामछअ॰ णचीतवीउं
समर्थपणु॰ जहनइंमागतिकमइसिद्धमीद्धापदर्वइ॰ कडाप्रज्ञासोसुरवनाकरणहा
रं॰ तसिद्धनोसुकनइंसरणंहु॰ ब॰ मूलनकयपडिवरका॰ अमूढत्तरका मंजागिए
चरका॰ साहावियत्तसुरका॰ सिद्धासरणंपरमसुरका॰ रद॰ जसिद्धमूलमंमारनू

मूलनरकयहेदवानइंप्रतिपक्षवयरीषणुकरइ॥ये सिद्धअमूढत्नदृष्टिज्ञानवंतदाना
कोईनादपइं॥संयोगीकेवलज्ञानीदिपइं मदजिइंमहानसुखमयहइ॥ति
सिद्धपरममोक्षनाकरणहारमकरद्विंशरणहु॥ब॥पडिपक्षीपडणीया॥समगानाणगि
दहन्नवबीया जोईसरणसमणीया सिद्धासरणसमरणीया ॥ध॥जारू
सिद्धपडिप ड ध्वीयप्रीतिपरि या निराकरिया॥टाल्या अप तेरंगवय
री॥अन इं म मयमानरू पी इ विश्वानरइंद ह्मा बा त्म्यान्न
वकहीइसं मा रातहरूपीयांबी ज बइंअनइंजसिद्धयो गी श्वररहि
स्मरणीयस्मर वा योग्यबइ॥तिसिद्धरू वडांमरुनइंमननइंध्यन स्मरणाक
रकायोगपदुइ॥ब॥पावियपरमाणंदा॥गुणनिस्संदाविदिन्नन्तवकेदा॥त्नदुईकय
रविचंदा॥सिद्धासरणंरवियदंदा॥२८॥जोदसिद्धेपामिउपरमानंदबइ॥सिद्धनी
सेवाजेकरइंतेरुनइंगुणानुसमूहदिइं॥अन इं विदारिटाल्यिउन्नवसंसारूपीउको

गुणजुत्तऊएजाविउअणगारजहरहिंकुणइंऊएजाविउसिद्धनइंसरणाइंसइणए
घीइंमिलिउमस्तकन्नलुएहासंइसिउंकुतउसाधुनागुणइन्नाइंकहइ॥ढ॥जिय
लोयबंधुणोऊगइसिधुणोपारगामहान्नाग॥नाणाइंएहिंसिवसुक्कमाहागा
साहुणोसर णं॥३१॥जिसाधुमहा त्माजीयणसमस्तजीव लोकनइबो
धवप्रायब इ अनइंऊगतिरू पी उसिंधुसमुइतेह न इपाशिगि
याबइंम हा न्ना गपंतज्ञान द र्श नचारित्रने गु णिं करी
मुक्तिसुख ना साधुणा हारएह वा साधुमहात्मानुंहं स रणपडव
जउ॥ढ॥कव लिणोपरमोही विम लनईसूयहराजिणा मयंमि ज्ञा
यश्यिउवन्नाया॥तसव्वेसाहुणासरणं॥३२॥कतलाएकमहात्माकवलज्ञानी॥
अथवा विपुलमती ऋतधरगणधरकहीइंवीतरागनइज्ञानसिद्धा चार्यउपाधा
य सर्वसाधुचारित्रीयाएहवा साधुमहात्मानुंमुकनइशरणाहु॥ढ॥चउदशादस

नवगुघी॥दुवालसिक्कारसंगिणोजीय॥जिणकप्पीहालिदिय॥परिहारविसुद्धसाहूय
॥३३॥जमहात्माचउदपूर्वधरादसपूर्वधरा॥नवपूर्वधरा॥इक्कादशांगीनाधरणाहा॥इगपा
रअंगनाधरणाहाराजिमहात्मा॥एकाकतलाजिनकल्पीमहात्माअहालिंदकसूक्ष्म
संपरायचारि त्रीयाप रिविसुद्धचारि त्रीयामहात्मामकरहिं शरणाहु॥ढ॥
खीरासवप्प दु याम व॥संन्निन्नसो य ऊहबुद्धीया चार ण लविउद्विय
याणु सा रि णो साहुणोसरणं॥३४॥जि महात्मारहिं खी रा प्रवलब्धि
विसरवासंधु खी रदूध घईपरिणाम इ॥जहनइंकडूंखा धुं गंतिनंउपरि
णामइंतिमध्या श्रवाजहनाश्लेष्मा घूंक मथरंतुमत्तमहूइ॥अ षधनइंका
जिआवइ॥दहनंमत्तमूत्रादिकसावीषधीमइंहुइ॥तसंन्निन्नायातलब्धिकही
इं॥जेमहात्मासघलुसिद्धांतपढिउगुणइकहीइंनही॥अनइंखीमरनइही॥तऊहबुं
धिकहीइ॥अनइंकगिमकपर्वतिजाइ॥बीजइंकगिनदीमरिवत्तउएकइंकगिआपणइं

मानकिआवइ॥ नेचारणलब्धिमहात्माकहीइ॥ विक्रियरूपकरइंतवेक्रियलब्धिसाधु
कहीइ॥ पदानुसारीएकपदकहीइ॥ एकपदपढतांसहस्रएकसउपदआवडइ॥ तेपदानु
सारीमहात्माकहीइं॥ एहवासाधुंमुकनइंआरणहु॥ ब॥ उन्नियवयरविसाला
निच्चमालिहा पसंतमुहमोहा॥ अन्निग यगुणसंदोहा॥ हयमोहा साहुणोसर
णं॥ इय॥ जे हु महात्माए उन्निनछो डि उंवयरविलोभइ॥ अ नइंसदा
इअइहु क णहुऊपरिचीत व इं॥ अनिग्ग म तां करीसु
रवनीशोन्ना ब इ जिहेअन्निगत जा णपाणुणानासमुह ब इ॥ जेहेहु
तहणिमोहब इ॥ एहवासाधुमहात्मा नुमुकनइंआरणहु ब॥ खंडिअसि
णेहदामा॥ अकामक्षमानिकाममुहकामा॥ सुपरिसमाणन्तिरामा॥ आयारामामुणीस
रणं॥ इह॥ जेहेमहात्माए खंडितखंड्यास्नेहनाबंधन॥ कामकहतांकंदर्पनूंतोडिउध
ंतनइंकंदर्पर हितबइं॥ जेसाधुश्रावकनारतेश्वरादिकनेहनीसपसंसानिहनूंध्यानकरइं

जेसाधुकामकंदर्परहितसुखनावांछणाहारजेसाधु॥ अनइंसत्रुकणनांमनमाहिचारित्री
यामहात्मावसइंअनइंजेमहात्माआत्मारामआत्मारूपीउआरामवनमेवसइं॥ हेनेहवा
साधुनुंमुकनइंआरणहु॥ ब॥ मिथ्यियवमयकमाया॥ उन्नियघरघरणिसंगसुहमाया
अकत्तिपदरिसविमाया॥ माहूयसरणं विहूयमोया॥ इग॥ जोहमहात्माए उन्नि
यछांडाविषय॥ अनइंकषायबइं॥ मि थ्वि यकहीइं॥ मनथापांचइंइी यरसनस्पर्श
न॥ घाणश्रोत्रचक्षुएहनाव्यापारछ इं क्रो क्रोध मानमाया॥ लोन्ना एच्चारइंक
षायबइं॥ उन्नियछांडीघरनां॥ घरणि क त्रनासंन्नोगवनांसुखसातादनी
सर्वछांडिउंबइं॥ हर्षअनइंविषादहीइन धी॥ आणतोयमहात्माविघ्ननिराकरि
उटालिउश्लोक एहवामहात्मानुमुकनइंआरणहु॥ ब॥ हिंसाइदासमुन्नाकथकारु
न्नासयंचुरुपन्ना॥ अजरामरपदवुन्ना॥ साहूसरणंकथपुन्ना॥ इछ॥ जेमहात्माहिंसा
दिषनेणिइंरहितबइं॥ रूनकीधुक्तरूपदयानुपरिणामबइं॥ सयंचुरुपन्नास्वयम

वआपदणीसमपक्रनीरुविरूपनीबड़ अथवा॥ स्त्र येचुरुप्रमाप्रज्ञाइंकरीपरिपूर्णन्नरि
याबइंअथवाआसमपक्रहीइवदइबइं॥ अनइंअजरामरप्रधमसुक्तिनइंमागिरचुन्नषूना
बइं॥ जिमहात्मासुकृतपुण्यतणिइंपरिपूर्णान्नरियाएहतासाधुनुसुकनइंशरणाहु॥ ब॥
कामविडंबणाचूका॥ कत्तिमत्तमुक्तविवि [क] क्चारिका॥ पावरथसुरथरिका॥ माहरु
णरथणाचत्रिका॥ इत॥ जेमहात्माक [र्म] नीविडंबनाचूकाबइ॥ कमलकहीइं
पापतणिविमुक्तमूक्याबइ॥ विवि [क] [त्य] क्रबोडीचारीबइ॥ अनइंसहुपा
पनूंमूलस्त्रीमिउंन्नोगनूंन्नोगविचू [अ] नेकियोनिमध्यमाहिलीजीवहिंसानूं
करवू॥ तेणिइंरहितबइ॥ एवैतलइंमेघु [न] स्त्रीसंन्नोगरहितबइ॥ गुणकपीएरन्ने
मंडितअनेकरियाबइ॥ चविक्कआक्षनो॥ णाश्वईजाणिवु॥ जेमहात्मासदाइ चर्चिइं॥
चारित्रगुणनाएणाइंकरीन्नरिआपूरिआबइ॥ एहवामहात्मानुमुकनइंसरणा ब॥
साक्षत्तसुहयाजें॥ आयरियाईनउथतेसाहू॥ सहुन्नणीएणगहीया॥ वेतम्प्रमूलसाहु

सरणं॥ ३ए॥ जेमहात्माआचार्यउपाध्यायादिकसाधुमहात्मापणइंत्यान्नइं॥ महात्माकहनो
आचार्यादिकमहूजाणवूसाधूपणइं॥ चारित्रनइंपात्तवइंमहूश्रीषुं॥ तेहुन्नणीतसघलाइ
चारित्रनापात्तनहारसाधुमहात्मामकरिहिंशरणहु॥ ब॥ साधुमहात्मानूंशरणचीजुं
वर्मविडं॥ ब॥ हिवइंचउथुंशरणधर्मनू [क] कहीइबइ॥ पडिवन्नसाहुसरणो॥ सरणंक
उं॥ पुणोविजिणधम्मं॥ पहरिसरोमंच [प] वंचकंचूयंचियसणून्नणाइ॥ ४०॥ साधु
नूंशरणपडिवज्जणपूविइवलीबली [जि] [न] धर्मनूंशरणकरीनइं॥ पहरिसकहीइं
॥ घणुहर्षातणिइंकरीसयरिघिउबइ [इ] जेरोमांचतेरोमांचनइंव्यापइं॥ सयरिसघ
लइघिउकांचूउयाश्रीषुदहूंतउ [इ] सिउंन्नाणइं॥ ब॥ पवैवरमुकपहिंपत्तं॥ एवं
हिक्मवशिकहविनपत्तं॥ तंकवलिपन्नत्तं॥ धम्मंसरणंपवन्नोहं॥ ४१॥ जेधर्मप्रवरपुण्य
नइंघमाणिइंपामिउंकेवलेहीजीवेनउघीपामिउ॥ जसदत्तचक्रवर्तिसुन्नूमचक्रवर्तिइं
नपामिउं॥ एकवलेन्नालपात्रेउक्रष्टेमाणसेनश्रीपामिउंतधर्मोकवलज्ञानीनउपरूपिउ

धर्मनुंशरणपडिवज्जउं ॥ ब ॥ पत्तणअपत्तेणथ ॥ पत्ताणियजेणनरसुरसहाइ ॥ सुरकेसुरूपी
यएतेण ॥ नवविधामासामसरणं ॥ ध२ ॥ जेणिधर्मिइपामिइ ॥ अनइअणापामिजीविइनरुअ
नइसुरादवनासुखणामणा ॥ एतलइअन्नव्वजीवादवनरसुखपामइ ॥ तदुन्नाणीअणापाम
इधर्मिइनरसुषपामणा ॥ पुणायुर्त्तिनासु खवजीवतउपामइ ॥ निश्चयपूर्वकमनव
चनकायनइयोगिइसमगप्पकारि इ श्रीसर्वज्ञनुधर्मआराधइ ॥ एतलइस
म्यक्त्वनाधर्मपारवइमुक्तिनासुख न पा मीइ तेधर्मनुंमुकनइसरणहु ॥ ब ॥
निहलियकसुकामा ॥ कथमुहजोग खं त्रीकथऊहामा ॥ पमुहपरिणामुरमो
सरणंमहहोउ जिणधम्मो ॥ ध३ ॥ जेणिध र्मिइनिहलिन निहलियां कलुखपापटा
ल्या ॥ जेणिइधर्मिइमुन्नकर्मनुकीधुजन्मअनइखलुकहीइदुर्जन ॥ ऊधर्मरुपीउदुर्ज
नजेणिइनिकासिउकाठिउ ॥ पमुहण ॥ आदिकहीइधुरिअतन्नाणिइवेहडइ धुरघऊ
छेहलगइजिधर्मरमरूडउबइतजिनधर्मनुंमकनइशरणहु ॥ ब ॥ कालनतणविनमयंज

मणजरमरणवाहिमयममयं ॥ अमयंबहुमयजिणमयंच ॥ सरणंपवन्नोहं ॥ ४४ ॥ जजिनम
तवीतरागनूआसनअतीतअनागतवर्त्तमानत्रिहुकालिकहीइं ॥ नमथंनघीविणवउजे
धर्मपतन्नइमहाविदहिक्षित्रिजधर्मकहीइउत्रिहिनघीगिउ ॥ शास्त्रनाकातन्नाणज
मजरामरणरूप ॥ व्याधिनासइं अनेकवा रमूयोविनयोगि ॥ ए जिनधर्मअमृतनीप
रइबहुमतघणाइं जीवअमृतनीपरिमा न इं अमृतनीपरिसहहइ ॥ तधर्मनुशरण
पडिवज्जउं ॥ ब ॥ एसमियकामणामाहे दि ह्या दिट्ठेसुनलियविसाहे ॥ सिवसुहफल
थममोहे ॥ धम्मंसरणंपवन्नोहं ॥ ४५ ॥ जिणा इं धर्मिइप्रशमितशमाविउकामकंदर्पनु
प्रोहरुपजवेवइं ॥ दग्धादवेसुदृष्टादृष्टेषु बादरअनइसूक्ष्मनिगादअणादिहदइं ॥ धर्मी
स्तिकाय ॥ अधर्मास्तिकाय ॥ एहवोघणाइं अदृष्टअनइं ॥ देषीतापदावीत्तिहो धर्मवंतम
निकरीविरोधनरुपजावइं ॥ जधर्मीनइंप्रसादिइं ॥ शिवसुखमुक्तिनासुख ॥ अमोघनि
श्चइपामिइं जिनधर्महुमननइन्नावइसरणपडिवज्जिउबउं ॥ ब ॥ नरथगईगमणागहं

गुणमंदोहपावायनिरकारं ॥ निहणीयवस्मदजोदं ॥ धम्मसरणंपवन्नोहं ॥ ४६ ॥ जेधर्मन
रकगतिनूंजाग्वू तेहनूंरूं भवु तेहनुकरणहार ॥ जेधर्ममाहिंगुणनासमूहबड ए२
दर्शनीएजजिनधर्मकालीनमकीड ॥ जेणिधर्मइहितहणिउवमइकंदर्पकूपीउयो
धरड ॥ तधर्मसुसरणपडिवजउं ॥ ब ॥ ना ❀ सुरसुवन्नसुदश रथाणलंकारगारवस
दगंो ॥ निहिवादागजइरं धम्मजिणदे ❀ मि ❀ यंवादि ॥ ४७ ॥ जितसीसर्वज्ञवीतराग
नुप्रकृपिउजीवदयामूलधर्मवाद ❀ उ ❀ म ❀ मस्करउं ॥ जिनधर्मपडिवजउं ॥ ऊ
णानीपरिड ॥ निधिनीपरिजिमनिधनम ❀ हू ❀ इलवाहीडइ ॥ निधिकदवीवड ॥ नासु
रत्नणीइदवीप्यमान सुवर्णकहीइहम ❀ रत्नपद्मरागआदिदेईअलंकारत्नणीना
विशाषजिमएतलांमहामघहर्घमुरूपंडइ ॥ धर्माकदवुनासुरदेदीप्यमान ॥ सकति
अनडंवलीजेधर्मनूंगोरवपणुअन्नयदानादवानुजेहनीरचनाघणप्रकारिकहीवड
अघवलीजदधर्मनडंपूजाविशेषविश्वसलघलइमानीइ तणिडंकरीमहगु ॥ अ

नइएधर्मदुर्गतिनुहरणहार ॥ नेश्वलधर्मनडंकरवइदुर्गतिजीवनइंजाइजिमनिधनदारिद्र
णइ ॥ तिमधर्मनडंपन्नाविंदारिद्रएणुजाइ ॥ धर्मलीलीशदीलीएजाइ ॥ तधर्मश्रीवीतराग
नुउपदिशाउंमडंमरणपडिवजिउं ॥ ब ॥ चउमरणमणसंचीय ॥ सुचरियरीमंचयंवि
यमरीरो ॥ कयदुक्कडगरिहाअसुह ❀ म ❀ मरकयकंपिरोन्नाइ ॥ ४८ ॥ चउमरणअरि
हंत ॥ सिद्धसाधुश्रीजिनधर्मएविहुन ❀ इ ❀ मरणनडंकरवइसंचितमंचयकीध
एकगामल्यो ॥ सुचिरितकहूतोरुडो ❀ क ❀ र ❀ णीयनडंकरवइजडूउमथरिरोमांच
तणिंत्राग्नउसयरएहवुहतुदःकृत ❀ क ❀ हीइपाडूयाकरणीयपापमइलोकवि
रुद्ध ॥ धर्मविरुधकरणीयकीधइंइव ❀ गर्हानिंदवुकरवइ ॥ तपापनडंनिंदवइअ
अनोकर्मपाडूयाकीधंपापतहनुक्षयकरइ ॥ तकर्मक्षयकरनुरोमांचितहूनुइमि
उन्नाणइं ॥ ४ ॥ इहन्नवियमन्ननवीयं ॥ मिछत्तपवन्नणजमिहगरणं ॥ जिणपवयणप
डिकुट्ठं ॥ दुहंगरिहामिनंपावं ॥ ४९ ॥ मइंअन्नाणन्नवि ॥ अथवाअनेरइंन्नविमिथ्यात्वनूंपव

त्तीवणहारजेअभिगरणापवत्तीविउंहुइ।दवदेवीनोमिछावत्तीकमाहिचालइ।जिमिछा
वजिनश्रीसर्वज्ञातहनोवचननइंवयरीप्राय॥अनइंप्रवचनश्रीमिछातातहनइंप्रतिऊ
हकहीइंवयरीप्रायातहवामिछावजीविइंजेकीधुहुइतगर्हानिदु इमआयणाइंमनि
निंदाकरवी॥ब॥मिछत्ततमोधणो॥अरि हंताईसुअवन्नवयणोऊ॥अन्नाणणाविरई
यं इणिगिरिहामिनंपावं॥५०॥इपेंडि वा मिछावरूपीइंतमिइंअधमइंघिइहतइ
जीविइंजेस्वयमेवउपणाइ॥अहंते श्री वीतरागनाअवर्णवादबात्माहुइ
त्माकमाहिअवर्णवादप्रवर्त्तीमाहुइ जे मइं अजाणपणाइपहवापापकीधुहुइं
तहनीनिंदागर्हाकरउंहुइतेहनोमिछा मिहुक्कडादेउं॥ब॥सुयधर्मसंघसाहुसु
पावेपडणीयाजेरईयं॥अन्नेसुयपावेसुय इणिगिरिहामिनंपावं॥५१॥अरजीवकु
तधर्मश्रीसिद्धातसर्वज्ञाकधर्मअनइंश्रीसंघअनइंसाधुमहात्मापतत्तानइंजेपापमइ
वचनबोल्याहुइ॥प्रत्यनीकवयरपणुकीधुहुइं॥तपीयानीनिंदाकीधीहुइं॥अनेरुंज्व

यरीपणुंकरिवुकीधुहुइं॥इवडोतपापगर्हाकरावउं॥निंदाकरउं॥ब॥अन्नेसुयजा
वेसुय॥मित्तीऊकरणायगोरेसुकयं॥परीयावणायदुक्कं इणिगिरिहामिनंपावं॥५२॥अ
रजीवअनराइजीवअहंतसिद्धआचार्यउपाध्याय॥सर्वसाधुश्रीसंघ॥पतत्तापत्तनीबीजा
जीवथोनिनइंविषइं॥मित्ती॥ऊकरणा॥न किंमेस्तवपरिचय॥आत्मापएवंविधममा
चरियोहुइं॥मनसुकृतपुण्यबुद्धिइंअवा जी वनइंपरितापनापीडाकीधीहुइं॥काई
दुक्कदीधुंहुइं॥इवडोतपापनीगर्हानिं दा क रउंमिछामिदुक्कडं॥ब॥जंमएबय
कायहिंकयकारियअणुमईहिंआयरियं धम्मविरुद्धमसुद्धं॥सव्वंगरिहामिनंपावं
॥५३॥जेएणंजीविइंमनअनइवचना अ नइंकायइं॥काईएकपापनूंकरवूंकीधुहु
इं॥अघवाकरावियहुइं॥अघवाकरतांअनेरांरहिंअनुमोदनाकीधीहुइं॥अनुमतिदी
धीहुइं॥अघवाआकुट्टिपाएइंकोइपापकर्मआचरियंहुइं॥जेकरणीयधर्मरहिंवि
रुद्धलोकरहिंविरुद्धकुडासन्मार्गरहिंविरुद्धं॥अनइंअसुपापमइंकरणियममाचरि

उ॥ इक्कु॥ तिया एहवा डांगरिहुइ। वनिदउ॥ ब॥ एतलइ पापनी गर्हा कहीइं॥ ब॥ हिवइ सुकृ
तपुन्ननी अनुमोदना कहीइ॥ ब॥ अरहो दुक्कडगरिहा दलिउक्कड दुक्कडाफुडेन्नाणइ॥
सुऊडाणुराय सदसुन्नपुन्नफुल्लयंकुरोन्नाणइ॥ ध्रु॥ जेगिंइंजीवइंदुकृतनीगर्हानइंक
रवइंदलितदनीमूकाआरहडंदुकृतपा॥ परहितकुनइ म्फुटपुकटइमिउन्नाण
इकहइं॥ सुकृतमुप्राणपातहनइंअनुराग॥ ऊ॥ पनइकुनइपुलकरोमांचितगात्रादह
हूइकुनइमननीसुन्नरुडीवासनांक॥ री॥ रो॥ मांचिसथरऊधमिउकहइ॥ ब॥
अरिहंतअरिहंतेसु॥ जेचमिहत्तणंचमि॥ हे॥ सु॥ आयारंआयरिएसु॥ उवज्झायत्त
चउवन्नाए॥ ध्रु॥ अरिहंतनइंनामिइंकाई॥ न॥ ल्लान्नइं॥ अरिहंतनइं अरिहंतपणुं
किमिउंचउत्रीसअतिशायपणुं॥ पात्रीसवचनाअतिशायपणुं अढारादाषरहितप
णुं॥ आवमहाप्रातिहार्यसिद्धान्नायमानपहवाअर्हंतनागुणजेअर्हंमाहिंकुइं॥ अन
इंजेसिद्धनागुणाजेसिद्धनइंअनंतुज्ञाना॥ अनंतुवीर्यी॥ अनंतुचरित्त॥ अनंतुपराक्रम

एहवासिद्धनागुणाजेसिद्धमाहिंकुइं॥ अनइंजेआचार्यनागुणा बत्रीसगुणाआचार्यनाकहीइं
तेबत्रीसगुणसहितजेआचार्यपणुआचार्यमाहिंकुइं॥ अनइंउपाध्यायनागुणइगयारअंगं
ग॥ चऊदपूर्वपढइं॥ पढावइं॥ गुणइं॥ गुणावइं॥ अथवाजाणइंकालिजिनलुंत्रीसिद्धांत
वर्त्तनउहुइं॥ तेनलुपढइं पढावइं॥ सूत्रनु॥ अर्थनु॥ एहवाउपाध्यायनागुणउध्यपा
ध्यायमाहिंकुइं॥ ब॥ सादूगसाहुचरि॥ यं॥ दिसविरइंचसावयजणाणं॥ अणुम
न्नेसद्देसिं॥ समन्नेसम्मदिट्ठीणं॥ पइ॥ जे॥ सा॥ धुमहात्मानागुणपांचसमितिसमि
ता॥ त्रिहुगुप्तिगुप्ता॥ पंचेंद्रियप्रबलदम॥ ता॥ नवकल्पिएष्वीमंडलविहारक्रमकरता
बेइज्ञातीसदोषविसुइआहारलेता॥ ए॥ हवासाधुनागुण॥ जमहात्माभाहिंकुइं
जश्रावकदेशविरतिपालनु तेहनागुणबारव्रतादेशनु प्रतिपालनु॥ एशिरहप्रमाण
जेहनइं अथवाअगुणचीसगुणएकत्रीसमध्यक्रनांचूषणासहितपांचदूषणरहित॥
एहवासम्यक्रनागुणाजेसम्यग्दृष्टीमाहिंकुइं॥ एहवानीजेनक्तिकीधीहुइं॥ एहवागु

णुण चित्तमाहिमहत्मा दुउं तेपुण्यनी अनुमादनाकरउं ब अहवा मइंचियवीयरायय व
यणणुसारिजेसुकडं कालत्तएतिविहे अणुमाएमोतयंमइं पञ्च सर्व० मघत्तोपुण्य
करणीय वीतरागनीवाणी श्रीसिद्धांतनेनइ अनुसारिजेपुण्यनुंकरणीयमइंकीधुं
कालत्तएविण अतीतकालिंजेमइंपुण्य कीधांअनागतकालिंजेसुकृतपुण्यकरे
सि वर्त्तमानकालिंजेसुकृतपुण्यकर उं ब उंतमघत्तोपुण्यनाकरणीनी अनु
मोदनाकरउं ब सुहपरिणामो नि इं चउसरणागमाइ आयरंजीवो
कुसत्तपयडीयबंधइ बद्धाउंसुहाणा बं धउ पञ्च सुन्नकूडइंमननइंपरिणा
मिइ चउसरनइंकरवइंजीवसुन्नोकूडा कर्मनबंधीयारकरइ एहवीकर्मप्रकृ
सुन्नकूडीबांधइं जेजीवनइंआगलिसुखनीकरणहारदुइ अनुबंधकहीइं मनकूडइक
रवइकूडांसुन्नकर्मबंधइ ब मदगुन्नावाबंधतिघगुन्नावा उंकुणइनाचेव असु
हाउनिरणुबंधउ कुणइतिघाउबंधउ पञ्च तेहवुसुन्नकूडीप्रकृतिकर्मनीसिघित्ति

टलीबांधीदुइं तचउसरणानइंकरवइंतेटोलोकर्माफडीआगाढोकरइ अनइं असु
भोपाडूथाकर्मजीविइं आगइंदृढबंधिकरीबंधोदुइ चउसरणानइंकरवइंतअसुन्नो
कर्मटालोकरइशिघ्रनइबंधनकरइ ब ताएथंकाथवंबुद्धिनिद्यपिमंकिलिमं
पिहणइतिकालेसमं अमंकिसेमिसु कथफलं द० तेहकारणबुधनराणाइ
डाहमनुष्यनिपामवचउसरणाक रवुंसोल्कयादुंतइजउजीवत्रिकासम्य
ग्प्रकारइंकरइ नउजीवनइदा हि त्ता इंमाहिमोहिल्लुदुइ ब चउरंगा
जिणधम्मोनकउचउरंगसरमविनके यं चउरंगनवछेउ नकउहाहारिउज
मो द१ जिणिइंजीविइं चरंगधम्मकली इं दानशीलतपभावनाय चतुर्विधध
र्मनकीधु अनइंजिणिजीविइं चउसरणामननइंभावइनकीधु अनइंजिणिइंजी
वइंमनसुद्धिइंकरीधर्मनइंकरवइं चारिगति देव मनुष्य तिर्यंच नारकीनीग
तिनुछेदनकीधु तेणइंजीविइं एहवुमनुष्यभवनहीधर्मनीसामग्रीपामीनिरर्थ

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

कपणइएजन्मनिरर्थककाजपारवइजीवहारइं॥ब॥इथजीवपमायमहारि॥वीरन्न
इंतमवसमामन्नेण॥काएसुतिसंकमवं क॥कारणनिहुईसुहाणं॥इ१॥अंजजीवप
मादिइमनुष्यपणुमहारि उवीरसमर्घबइ ग्राणनिफलन्नणाइ सफनिवृतिमुक्तिनुसुख
निश्चलपामइ एवातनुसादहनारी एसं सारमाहिंचउसरणुसुआराणजीवि
इनिल्पामवसदाइकरिवुजिमातज्जीव न रकहीइमनुष्यनोसोरम्यादवनोसो
रव्या॥अनइमुक्तिनोसुखलहइंजी व म हो॥ब॥इतिचउसरणाऊसत्तावेधि
यध्ययनमुबाल्लाबोधवृत्तिपत्री॥गंधाग्र श्लो कसरमाइ४२॥संवत१६ वर्षेविजाघसु
दिश्रदिने नाद्दारकश्रीधश्रीविजयसे नसूरीशसकलभट्टारिष्यश्रेणितिलकजल्ला
लदीनसाहिश्रीअकबरपातसाहसभासाधिताश्रष्टावधानप्राप्तसकललोकचमकारिबुसफ
हिमबिरुदधारकवाचकश्रीधश्रानंदविजयगणिचरणांबुजषट्पदसमानगणिराजविजयेन
सिनाचन्नद्दारकश्रीधश्रीविजयदेवसूरिविजयराज्ये॥सकलश्रीसंघकल्याणकारबाइमटना
र्थं॥

१६